सुजानसरोज

प्रथमखण्ड

जिसमें

उन्नीसवीं शताब्दी के वर्तमान कविवृन्दों की कविता और जीवन चरित्र बर्णनहै जिस्को श्री पण्डितवर बख्शरामपाँड़े सुजान कवि निवासी बलिया नगराधीन हल्दीने कविता रसिकों के चित्तविनोदार्थ संग्रहकिया ॥

और

श्रीबाबूबुद्धनारायनजी निवासी हल्दीने अतिपरिश्रम पूर्वक ज्योंका त्यों उल्थाकर विदितकिया ॥

पहलीबार

18

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
फ़रवरी सन् १८९६ ई० ॥

हक़तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ नवलकिशोर प्रेस ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीनिकुंजबिहारिणेनमः ॥

प्रस्तावना ॥

दोहा ।

रहिमन वे तरुनारहे जिनकी छाँह गँभीर ॥
अब बागन में रहिगये सेहुँड़ कंज करीर १

प्रथम में उस सर्व्व शक्तिमान् करुणानिधान दया घन गगन जगदीश्वरको सानुनय कोटान कोटि धन्य-वाद देताहूँ कि जिसकी कृपा कटाक्षसे आज मुझे यह अलभ्य औसर प्राप्त हुआ है कि अपने इस क्षुद्र ले-खनी द्वारा आप सब महानुभावों का गुण उल्लेख कर निम्न लिखित वाक्यों से आप सबों का अमूल्य समय व्यर्थ व्यतीत कराने को प्रस्तुत हूँ ॥ प्रियबरो ! मैं इ-सी भारत का एक तुच्छातितुच्छ व्यक्ति हूँ यद्यपि पर-मेश्वर ने विभव व्यवसायि तथा विद्या ऐसा कुछ दि-या नहीं कि जिससे आप सब चीर परिचितहों। दूसरे वीर केशरी वीरेन्द्र विक्रम तथा भोजका समय भी न-हीं है कि जिसके सभा में अनेक प्रान्तों के कवि कोवि-द एकत्रित हो एक दूसरे सह अपना परिचय सम्बन्ध प्राप्त करें यह बात आपसब भलीभांति जानते हैं कि हमारी मातृ भाषा जिसभांति अवनति दशाको प्राप्त हुई है और होरही है इसके सूक्ष्म कारण को बिचारने से भारतेन्दु जी के अकाल काल ग्रस्त होना भी एक कारण प्रतीत होताहै क्योंकि उनके समय तक ऐसी दशा नहीं थी कि अभ्यास के अर्थ प्रेकटिज़ कहने से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हमारे भाइयों को बोधहो ॥ तो भला ऐसे समय में सिवाय पयटरों के कवियोंको कौन पूछ सक्ता है । हम इस बातपर बहुत उद्यत हुये कि इससमय जितने वर्तमान कवि हैं उनकी नामावली मय जीवनचरित्र के संग्रह करूं वरन इस बात का हमने कई एक पत्रों पर विज्ञापन भी दिया पर अब कविहई कहां है इस समय जहां तक देखी जातीहै लुके छिपे लौंडोंकी कविता कवियों की गणना सूचित कराने में प्रस्तुत है पर यदि उनका जीवन चरित्र देखा जाय तो कोई आज सूतिका गृह से निकलेहैं और कोई काल्ह माके पेटसे जनेहैं तो भला ऐसे लोग अपना क्या जीवनचरित्र भेजें सहायता दें ? जो बचे खुचे सत् कविथे उन्होंने तो भेजही दिया मुझे यह पुस्तक बनाने में यह अभिप्राय नहीं है कि हमारी नामवरी प्रख्यात हो वरन मैं यह चाहता था कि भविष्य काल में यह ग्रंथ इतिहास रूपहो आप सबों का नाम चिरस्थायी रहे आशा है कि हमारे इस लेखपर कविजन विशेष ध्यानदे अपनी २ नामावली भेजेंगे कि जिसको दूसरे खंडमें प्रकाशित कर आपसबों का अद्वितिय यश पात्र बनूँ अन्त में मैं उन सम्पादकों को भी धन्यवाद देताहूँ कि जो लोग इसके सहायता दिये हैं और देकर उत्साहित करेंगे किम्बहुना ॥

आप सब कवियों का कृपापात्र

पं० बख्शरामपांडे (सुजानकवि) हल्दी

बलिया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुजानसरोज ॥

अजान

विमोहितसन्तपढ़ैद्विजमन्त सदा सुखतन्त है शोभ अपार। सिकोराम पुरैनविलास सरोज विकास सुगन्ध अपार॥ मधुब्रत ऐसो सरोवर वासते जो न गयो मनते सुविकार। अजान यही मन कीन्ह बिचार कि भाल लिखी लिपि को सक टार १॥ दो० ॥ सम्बत शशियुग अंकमहि फागुनमास हुलास। विरोल्लास प्रकाश किय कविअजान सविलास २॥

अम्बादत्त

काहू ठौर माखन की चोरी होत चारोंओर कहूँरास लीलाही की रीति सरसाईहै। चीर को हरन कहुँ यमुना के तीर होत गूजरिनहूँ ते कहूँ रोक टोक छाई है॥ अ-म्बादत्तहूँ ने आनि कही अहे सही बात गोपी अरु ग्वाल चाल चले मनभाई है। जाइ अब बसिये अनत काहू गावँ माहँ गोकुल के गावँ में अनीति अधिकाई है १ फंकहु पचीसी दूर कहा सोरही में अहे नाम जनि लेहु कर नाटक तमाशा के। लखे शतरंजहूमें रंज होत शोच करे छुओ जनि चौपर को वश होय पासा के॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अम्बादत्त आचरज जोपै कछु देखा चहो चातुरी चला-
की अरु बुद्धिके बिलासा के। खेलये अनूठो अति रूठो
को रिझैवोवारे लखो करो महाताश कौतुक पचासाके २॥

ईश्वर

पाय पंच भूततन विषय अनेक संग लीन ह्वै नशोच
कियो आपने सुगति को। मोहित कुरंगसम वागुर वि-
षम फँस्यो ससकै न जात जाते ईश्वरजू रतिको॥ संतन
सिखायो सिख श्रौण ना सम्हारो ताहि विदित जहान
भयो ऐसो दुरमतिको। आयोआधो बैस नगिचायो मृत्यु
बासर सुगायो ना गवाँर तैंने नाम यदुपतिको १ बालक
समैमो बैस बादिही अबोध गयो खेलत खरात खेल
कलुष कुगति को। आयो तरुणाई संग तरुणिन प्रेम
पाग्यो सन्तत सराहत स्वभाव दुरमतिको॥ होत पछि-
ताये अब ईश्वर जू बादि कहा जरा ज्वर घेरो भयोहीन
जू शकति को। चारोपन बादिही गँवायो कहा पायो
हाय गायो ना गवाँर तैंने नाम यदुपतिको २॥

कालिका

लाड़िली पिया के संग झूलत हिंडोला मांझ इन्दु
मुखी सरस सोपानि दियो गरमें। आस पास नारिगन
सुन्दर सुवाद्य लीन्हे लावनी सुभग राग गावें पंच स्वर
में॥ आनि आनि बुन्दै मुख परै झरै, खरै २ कालिका
सुधाकर ते सुधाजनु सर में। शरमें दुलारी प्यारी बारी
सुकुमारी कहे हाहा प्राणप्यारे मम गहो कर नरमें १
मचीफागु धुधुर असाढ़ कैसो धराधर ब्रज बीथिकान में

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तमाम रंग ह्वैगयो। नाचति मयूरन सी घन सो निहारि श्याम चपलासी राधिका नवेली आनि ह्वैगयो॥ कोकिला सी गान इन्द्रबधूसी जनाती बाम कालिका कहत घन घहरे मृदंग यों। कुंकुम अबीर बुंद बरसे अपार धार बीचहि बसन्त जनु पावस उदय भयो २॥ दो०॥ भईव्यथा मनमें अधिक सुनी न पियकी बैन। अब करिहै को प्यार सखि दई व्यथा जो मैन ३॥

कृष्ण

कीन्ही जे शिकायतें हिकायतें बनाय झूँठी राज्य के बिरोधी क्रोधी मानो बन्धु कालके। जानि वे प्रमान को न ध्यान कीन्हों काहू कृष्ण सुहृद अतृष्ण लाट आयो कियो ख्यालके॥ परम सुजान जानि भूप औ दिवान जूसो चलत समैमो कह्यो वचन सम्हालके। वाह २ सुनिके प्रसन्न भये ख़ैरख्वाह भागेसुसियाह बादशाह जे भुआल के १ आरामो प्रेम पसार बढ़ाइ बनाइ के व्यंजन फूल फली सो। आइ करी पुनि आपने गेह सुब्राजे मँगायके प्राग थली सो॥ ऐसो प्रसन्न किये सब साहब दीन्ही मिलाय कुमार बली सो। श्री डुमराँव महीपतिने करी लाट की जाफ़त भाँति भली सो २॥

कार्तिक

आजुरी वधाई चलो ल्याइये छबीलो लाल ऊषा अनिरुद्ध को सुमंगल रचाइये। चलै वेगि द्वारावती ल्यावहि कुमार मार रतिको दुलारो निज सखि प्यारो पाइये॥ बिरह बिकल मुख कमल झुरानो जात दरशन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वारि सींचि ताहि हरवाइये। देहि अभिमत फल शंकर सहाय होहि बरलेन जाहि याते गौरिजा मनाइये १॥

कान्ह

योग जपादिक को करिबो अरु भाँवरि तीरथ के भरिबे को। सन्तत सन्त समागम को अरु ब्रह्मविचार विचार करे को॥ कान्ह भने गुने औ मन शास्त्रन मास समेतहु दान किये को। सो गुरु अंघ्रि सरोरुह सेवत है फल ये जग देहधरे को १ शीतल सुगंध मन्द मारुत स्वनित रूरे पूरे धूरि धूसरित रोदसी बिहारेरी। कुंजन पलाश फूले डारन अगार पुंज गुंज मधुपाली मन मुदित प्रसारेरी॥ कान्ह कूकि कोयलियान फूँकि २ बरबस बिरहा अनल हिय प्रबल प्रजारेरी। हारे करि यतन अतन सो सहायक लै कन्त बिन सजनी बसन्त तन जारेरी २॥

कमलाकन्त

होरी अहीर को साँवरो छैल छबी यहि मारग ह्वै निकसोरी। सोरी गयो यहि मारग ह्वै करि झांझ पखावज की घनघोरी॥ घोरी अबीर गुलाल गुलाब में बाँह गहे औ किये बरजोरी। जोरी निहारत वारत प्राण सुडारतरंग पुकारत होरी १॥ दो०॥ जिल्लनपति गोरक्ष पुर जानत सकलजहान। बसत रापतीतट निकट कुँवर ब्रती सुखखान २ शरद शुक्ल तिथि पञ्चमी सुकृतुशरद बुधबार। अष्टादश शत छानबे भयो ग्रन्थ सुखसार ३॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खड्गमल्ल-लालकवि

सीता संग सुन्दरी सुएक ओर हर्षित ह्वै हिलिमिलि मंगलादि गीत उचरति हैं। एक ओर मांग मुकुतान ते सँवारे कोऊ काहू पद नाइन महावर भरति हैं॥ एक ओर लाल बहु बसन रसीले धारि नारि पुरबासी युथ युथ निसरतिहैं। कौशल्यादि कैकयी सुमित्रा मिलि एकओर मणिगण राम पै निछावरि करति हैं १ माचो देवलोकमें अनन्त खलबल लाल ब्रह्मा वेद भूले छुटे तारीहू महेशकी। डोले लागी पुहुमी समुद्र थहरान लागे झिलमिल होन लागी कीरन दिनेश की॥ दरकनलागी पीठ कोल अरु कूरम की करकन लागी त्यों सरस फनशेश की। सहित समाज आजअवधपुरी में जब निकरी सवारी महाराज अवधेशकी २॥

गजेन्द्र शाहि

सुखद हुलासिनी प्रकाशिनि अखिल लोक दासदुख दूरिकरि बिरदहि धारि है। प्रबल प्रचण्ड भुज दण्ड बश शस्त्रधारि मारि दुराचारी दुष्ट क्षणमें संहारिहै॥श्री गजेन्द शाहि अम्बे निजजन हेतु जानि कैएबार दैत्य दल दंगल बिडारि है। सर्वरूप धारि हरिहरहू सहाय कारी मातु दुर्गा मेरी सदा शरण तिहारीहै १ एरेमरे मन धारु सिख मेरे हियबीच त्यागि माया फन्दे भजु दशरथ नन्देरे। श्रीगजेन्दशाहि जेतेनभ मेंन तारे तेते तारे अघवारे तेभये हैं निरद्वन्देरे॥ श्रीमन्महाराज कोशलेश राघवेन्द्र ऐसो जपि नाम जन काटेयमफन्देरे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छांड़ि छलछन्दे सब आनँद के कन्दे मन एक बार सीता रामचन्दे क्योंन बन्देरे २ सुन्दर सुहावन सरूप मन भावन दनुज को सतावन हरन दुख द्वंद के। जग आदि कारन सँहारन असुर मद तारन सुजन कोटि दायक अनन्दके॥ श्री गजेन्दशाहि सुख दायक सुरनि सदा लायक सबनि के सहायक सुरेन्दके। छांड़ि छलछन्द सब आनँद को कन्द भजु दारिद हरन है शरन रामचन्दके ३ पाल्यो देश देशको भुआवल नरेश भले यशको प्रसाख्यो जग नभ पूर्ण चन्दसे। अन्त रटि राम दशरत्थ सम गंग तट चढ़िके बिमान सुरधाम गौ अनन्दसे॥ भरतसे दलशाहि शोभनाथ शत्रुहन लखन अहलासिंह उदित अमन्दसे। बलिया बखानी औधि राजेराजधानी भये ईश्वरबकश देवराजारामचन्दसे ४ राधिका संग सखीन को लै बहुफागरची ब्रजमें करि घूमहि। दै चिटकी करतालहि नाचहि गावतीग्रीव कपोत से दूमहि॥ शाहिगजेन्द्र तहाँ नँदलाल को बाल नचावति तालदै झूमहि। गाल गुलाल लगायभले मुख गोप बधू ब्रजलाल के चूमहि ५॥

गुलाबसिंह

रैनिबड़ी लघुद्योसन में मुहिं मारक मार मरोरिधरेगो। तीरसो पीरक शीरक बीर न धीर समीर समीर अरेगो॥ भानुशशीभ्रम आतपजान्हि गुलाबनिरन्तर जीव जरेगो। हन्तहिमन्त अनन्त में कन्त किं अन्तक मो दुख अन्त करेगो १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गोविन्द

दो० ध्यान धरत दुखदहतहै नामलेत सुखदेत। नमतसिद्धि निधिदेत है गनपति बुद्धिनिकेत॥ भूपति किशुनकिशोरविधु कीअनुशासनपाय। रचोकोक भाषा विशद कामकेलि सुखदाय॥ सम्बत नभवसुवसुधरनि चैत्रमाससितपक्ष। चन्द्रबार गुनि चन्द्रातिथि भयो ग्रंथ परतक्ष॥ जीतो भुवमंडल अखंड खग्ग वृन्दनिसो शत्रुन की काटि रुंड मुंड झुंड पोये है। बार २ बैरी बनितान के बिलोचनके आंशुन के धारा पारावार पै समोये है॥ कहै श्रीगोविन्द भूप किशुनकिशोरचन्द जूके तेज पुंज मारतंड ज्योति जोयेहै। चारोओर बीर रनधीर न अमीरन के कम्पे भयमाने उरमानो शीत भोये है ४॥

गोपीनाथ

कृष्णरिझावन एक समै सजिसाजचली वृषभान दुलारी। श्यामलरंग रँग्यो सब अंग गह्यो कटिपीत सुवस्त्र सुधारी॥ पंखमयूर के ताजकियो अरुबंशी को टेर सुटेरतप्यारी। राधिका कृष्णको रूपधस्यो तबश्याम भई छबि श्यामनिहारी १ कैपितुमातु सुतादिकत्यागिके गैलगहो बन मंगलकाजे। कै निज नारि उरोज लगे पुनि भोग करे सुख सम्पतिसाजे॥ सार यहैजग माह दुहूं सबबेद पुराण कहै छबि छाजे। कै शिवभक्ति बिरक्तनकी अरु कै जनि के पग पैंजनिबाजे २॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गौरीशंकर

पण्डित प्रबीननको मानद दयाको धाम परउपकारी देव तरु सो उखरिगो। चातुरी की लीनो कला नाना जाति भांतिनके कुसुमसमूहनके बनही उजरिगो॥ कौन करे शिक्षा अब तनमन धनलाय शिष्यन के आदरके बादर उघरिगो। श्रीप्रतापमिश्र सुरलोकहि सिधारयो हाय नागरी गुनागरी को भूखन उतरिगो १॥

गोपालानन्द

दो० भारत राखन जो चहो चाहो निज प्रतिपाल। तो तन मन धन दै अहो रक्षो गाय गोपाल॥ आवत है लज्जा नहीं तुम्हैं देखिये हाल। बधिक बधे नित गाय कह तेरे सौंह गोपाल॥ क्या करनी निज आर्य्य की गयो भूलि यहि काल। जिन गैयन हित आपनी दीन्ही प्राण गोपाल॥

चन्द्कला

द्विज कपि हित कर शील धर अरिहारक रणधीर। पालक दीन अनन्त के गौर श्याम रघुबीर॥ बुन्दी पति रघुबीर ललामा। शीलादिक उत्तम गुण धामा॥ विक्टोरिया खिताब पठायो। के, सी, आई, ई छबिपायो॥ जब लगि महि अहि शीश पै तब लगि जग सुख दाय। होतरहे उत्सवइसो चन्द्कला मन भाय॥ रास रच्यो नँद नन्दनने तिन गोपिन को लखिके रतिलाजे। हाथगहे हरिको करमें कोउ कन्ध धरे हरिके छबि छाजे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चन्दकला नवला कोउ नाचहि लाय कटी रसना रस बाजे। कैंजनि के बिछिया पग बाजत कैंजनि के पग पैंजनि बाजे॥

छबीले

आवत घिरोसो तम दिनह फिरोसो नित सीत परसोसो पवमान सरसन्त में। ओस बरखोसो तामें रस भुरसोसो कोक बिरह उसासो कोक नद बिलसन्तमें॥ भाग उभरो सो वाके अंक लै धरोसो जिन तीयपी छबीलो ऐसो समय इकन्तमें। उरमें अरोसो मेरे बिरह खरोसो मोहिं परत भरोसो अन्त करिहे हिमन्त में १॥

जगतनारायण

ईशामसी आयो इक धर्म धुज धारिबे को बरन बिगारिबे को कमर कसी रही। नीचन को साहिबी मुसाहिबी गलीजन की राम नाम मेट के सलाम सी धसी रही॥ वेदन को खण्ड मण्ड आपनो पाखण्ड धरे और की न माने आनि आपनी बसी रही। पूरब निकास आसी रसना समेट लीन्ही ईशा तोन दीशा मिसी दातन फसी रही १ सबते विनय करूं कर जोरी। मानहु सत्य विनय यह मोरी २॥

जगन्नाथ

जादिनते बिछुरे मन मोहन तादिन ते पतियो नहिं पाई। मैं अकुलाय रही सखि हे अरु कृष्ण भये कुबरी बस जाई॥ आपु वहाँपर राज करे कुबरी जड़को निज

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रानि बनाई। ए इतनी सुनते बतिया हिय फाटि गया पै दरार न आई १ बहुत दिनन लों मैं कीन्हों संग पण्डित के तापै यह बात कोऊ मुझको सुनायोना। पढ़ो मैं किताबन को भाँति २ काल बहु ऐसो ए कवित्त निज नैनन लखायोना ॥ कहे जगन्नाथ शुक्ल सुनियोजू सीताराम सुनिके समस्या अस मेरे मन आयोना। मैंही तोसों पूछों यही लागि कहो पण्डित जू रति रस रंग अंग कौनि डोलि पायोना २ ॥

तिलक

मुकुट के प्रभापै प्रभाकर सहस्र वारों और वारों कंज दलश्यामपलकन पै। भनत तिलक मुख मण्डल पै वारों चन्द्र कोटि काम वारों श्याम बपु झलकनपै ॥ बंशी त्यों बिशाल लाल अधर अमोलन पै मोतिन की लरी वारों श्रम जलकन पै। और कहा वारों कछु मोसों ना कहत बने बाँकुरे बिहारी के अमोल अलकन पै १ भादव की निशि कारीघटा घनशब्द कठोर सुनाय रहे। लागे निमेष नहीं अँखियां तिहिपै शर मैन चलाय रहे ॥ पापी जिया न मनाये मने बिरहानल ज्वालजगायरहे। काह गुनाह कियो बिधना पिय जाय बिदेश जो छाय रहे २ ॥

दूधनाथ

भवको भरनि भव भव को करनि खल फनि की भरनि सिरी भवकीघरनिहो। भव की जननि ममदुखकी दलनि दीन दुखकी दलनि मोहि दुखकी हरनिहो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हतत कदन मम बदन सुनहु मातु हतन करहु ममदुख की दलनिहो। दूधनाथ दीन जानि हतत कसाई मोहिं अब न बिलम्बकरु सुखकी सदनिहो १॥ देवीसब बरदायनी सुखद जौहरी नाम। तिहिढिग भलसडनगर में विरच्यो चरितललाम॥ सम्बत बिक्रम भूपके जलधि वेदग्रहभान। भाद्रमासके अन्तमें पूरण भयउसुजान २॥

धर्मराज

सांझ समय बनिता ब्रजकी नकबेसर नूपुर भूषण साजे। अंग शृँगार किये मगमें झुमि चाल बिलोकिके कुंजर लाजे॥ गान किये कलकण्ठ लजावति तालजुटे रव किंकिणि बाजे। धर्मराज हग देखि मोहे मदखंजन मीन मृगन भाजे १ प्रिया मुख चूमत हरि ना अघात। पावसमें चढ़ि अभय अटा दोउ हिलिमिलि पछराखात॥ जोबन के मद छके छैल छुटि करत विविध छल घात। धर्मराज निरखि छबि दोऊ बार २ बलिजात २॥

नवीन

रँग रावटी चित्र विचित्र रची हरियारी कियारी सुहावनमें। शुचि हीयनवीन प्रवीन प्रिया रति रंग उमंग बढ़ावन में॥ निरशंक ह्वै फूलन की परयंकपै अंक भरे चित चावन में। मधुरो अधरारस चाखि लखे धुरवान के धावन सावन में १ मेचकता तन त्रानकसे चढ़ि पौन तुरंग दशोदिशि धावे। चापनवीन पुरन्दर को गहि बाणसे बुन्दन को बरसावे॥ तेह भरे गरजे तरजे असि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विज्जुछटा करले दिखरावे। जानि हमें अबलासबभांतिन बीर बली धुरवा धमकावे २॥

प्रताप

छप्पय–तजि दुखप्रद दुरव्यसन पुरुष बनिता अरु बालक। मनक्रम बचसे होहिं सुखद आज्ञा प्रतिपालक॥ निज गौरव पहिचान सजग रवि कम्पहि जनसो। करहि सबै सब काल देश हित तनमन धनसो॥ भारत में चहुं दिशि प्रेममय धर्म ध्वजा फहरतरहे। बाणीप्रताप हरि मिश्रकी सुहृद हृदय आदरलहे १ मन्द महा मधुरी मुसुकानि में नेकहिले जिय देति हिलाई। त्योंपरताप जू दन्त लगे सिसकीन की सौगुन शोभ सुहाई॥ स्वादसोसाने रसीले अंगुर सो कुन्दरी लों लिये लोनी ललाई। वे अधरा अधरान धरे रहे देह धरे को यहे फल भाई २॥

प्यारे

प्रहलादसे रारिकियो हिरनाकुश रामने मारिके प्राण नशाई। कौरव पांडव युद्धकियो सो प्रसिद्ध अहे किमि होत अनारी॥ सा त्यहिकालतेराजछुटो सब ह्वैके खराब सुराज बिसारी। हे प्रिय मित्र बिचारकरो झगरा रगरा किय लोक उजारी १ दूरिके बात तो दूरि करो अब देखहु तू निज नैन पसारी। बम्बई औ बलियागढ़ आजम होय गयो जुउपद्रवभारी॥ हिन्दुन केते मिले धरि धूरि तुरुकनहूकत प्राणबिसारी। हे प्रिय मित्र बिचार करो झगरा रगरा किय लोक उजारी २॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूरण

या मनने कभू न कीन्ह विचार॥ सारासार बिचारन कीन्हा फँसगयो मायाजार। बुरासमय जबइसपरआया तब शिर दैदैमार॥ निबलदेखि बहु द्वन्दमचावे लाखों देवेगार। सबल देख चुप का होजावे ऐसानीचगवाँर॥ अपने सुखके हेतु द्योसनिशि ऊदम करत हजार। कह पूरण तू मनुआंमेरो चीन्हों आतमसार १ बलवन्त नगर अस्थानहै जन्मभूमि सोजान। झांसी जासोंकहत हैं आतम ज्ञान बखान २॥

पन्नालाल

पूत बिरंचि से मीत तमारि तुषार तऊ जलजातहि जारी। दूरिकलंकभयो न मयंक बसे त्रिपुरारि के शीश मँझारी॥ सीयत्रिलोक धनी वर पायके दुःखलही जग जानतभारी। ब्याधके हाथ गुपाल मुये कहुभाललिखी लिपिकोसकटारी १॥

बीर

एरी चल बीर तोको श्यामसोंमिलाऊं आली आज बनमाली भेंट होयगी सहलमें। वेगि चलुधाई तोतें सांचहै सुनाई होंतो आपलखिआई कोऊ गोपना टहलमें॥ मतहहराय मेरी कही मनलाय वृथा प्राणनगवांय गुरुजनकी दहल में। हीतल को ताप क्योंन शीतल करे तू बीर मिलि बलबीरसों उसीरके महलमें १ पावस में जातहो सुजान ह्वै विदेश कान्ह जानतहो नाहिं कहा ह्वै है गति याकी है। जादिनते सुनी है तिहारे चलिबे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की बैन मीन सी तरफराति देखोना छिनाकी है॥ ऐसही बिछोह जो बिचारो हतो बलबीर प्यारी तनवारी क्यों लगाई यालताकी है। हृदय कियारी माँझ सींची प्रेम जीवन सो खल मति जानो यह बेलि बिरहाकी है २ घर बार बिसारि दियो सिगरो गुरुलोगनि की नहिं भीति करी। सखियान की सीख सिखी न कछू कछु न्यारही लोकते रीति करी॥ समुझावतही बहु बीर हमें सबभूलि केहां परतीति करी। हमहीं वह लाल अनीति करी तुमते बिन जाने जो प्रीति करी ३ होली के खेलैया बलबीर जूके भैया सुनो सुता बृषभान की है कसक निकारेगी। मूठलै गुलाल लाल कान लगि ऐंचि ताके तिरछी चितौनि कछु मूठ सम मारेगी॥ सखिन समाजलिये आज चलि आवति हैं ग्वालन की भीर भार नेकु ना बिचारेगी। श्यामरंग पीत पट हेरेहूं दिखैहै नाहिं देखतही लाल तुम्हें लाल करिडारेगी ४॥

बुधन

रास रच्यो यमुना तट मोहन लैसँग में सब गोपकुमारी। धारि अनंग से अंग प्रभा करि चित्त उमंग बजावत तारी॥ कोऊ गुपाल गहे कर पंकज ठाढ़ी बके बनिके मतवारी। कोऊ लखे मुख साँवरो बुद्धन कोउ नचे सँग कुंजबिहारी १ हौं हल्दी बासी सुवन बुद्धन राय सुनाम। पितु मम राम इयादि जिन गयो सुभग सुरधाम॥ बालहिते पढ़ि नागरी कियो मिडिल गुण पास। पैबिन पाये नौकरी निशिदिन रहत उदास ३॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिंधेश्वरी

बन्दौं शिव पदरेनु सुखदाता त्राता सुजन। महा क-ठिन जग जेनु जे निज बल बश मार किय ॥ सहगौरा मम ग्राम अन्तर्गत गोरक्षपुर। बिन्धेश्वरी सुनाम अ-वनी सुर द्विज पंक्ति कुल ॥

बामन

भूषण बसन औ असन बहुभाँतिन को भक्तन के भौन पै बिराजे भराभरमें। हीरालाल माणिक अकूत मुकुताहल हूँ कल चाप रहे महा आनंद अमर में ॥ बामन भनत भगवानभूतनाथ तेरे नखन दिवाकर के महिमा समरमें। बितल रसातल लों आठोयाम दी-नन पै बरषे मघाली दान धारा धराधरमें १ कैसहू अभागी अज्ञ होवे जो जहान बीच साँचो जिय नेम सो बिचारे यह इसी की। प्रात शिव पूजन कै ध्रुव सों सुधारे ध्यान भव्य भगवान भूतनाथ अवनीसी की ॥ बामन भनत ताको पूजे मनकाम सबै कहत पुकारि होवे सत्य बिस बीसीकी। प्रणते प्रतक्ष पन्नगेश बेश भूषण को पाठ जो सुनावे पंचआनन पचीसी की २ वह मार को छार किये जु रहे करिभस्म सुतासु अडम्ब-रसो। फिरि योग के राज कहाय महा धरिउर्ग त्रिशूल बघम्बरसो ॥ कवि बामन सो गिरिराज यहाँ कोहवार में धारि पितम्बर सो। पुजवावति आपन देव सोई तिय ढाँपि दिगम्बर अम्बरसो ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वचन

वरदाता माता पिता ज्ञाता दीन निवाज। बच्चन वा
जगदीश पद ध्यान कह लाज १ श्याम बरण पै तम ह-
रण रस बस चंचल चोर। नन्द यशोदा पूतरो नैन पू-
तरो मोर २ प्रश्नोत्तरी उदार रसतरंग रसरंग हित।
अल्प बुद्धि अनुसार बरणत बच्चन लाल द्विज ३॥

भानु

रोला के पद चार मत्त चौबीसधारिये। उल्लाला
पद दोय अन्तमाहीं सुधारिये॥ कहुँ अट्ठाइस होयँ
मत्त छब्बिस कहुँ देखो। छप्पयके सबभेद मीत इकहत्तर
लेखो॥ लघुगुरुके क्रमते भये बानी कवि मंगलकरन।
प्रगट कबित की रीति भल भानु भये पिंगल सरन १॥

मार्कण्ड

नवलमेघसावननवल नवकुंजनआनन्द। नवमयूर
सावननवल नवराधेनँदनन्द १ हिंडोरे झूलत युगल
किशोर। श्रीनँदनन्द प्रिया अलबेली श्रीराधेचितचोर॥
सूर्य्य कोटिप्रति प्रभाविराजत दामिनि लक्षकरोर। हुल-
सि मारकंडे गुणगावत लखि २ प्रभुकी ओर २॥

रघुबीर

पूरोचन्द्रहासकर बाननविलोकियतवर्मतरचर्मऐसो
सकलकलाकोहै। पाटिनकेबीच तरवारनकरतवज्र चक्र-
नभुशुंडीतोप परम प्रभाकोहै॥ भालहूमें परशानराचहू
ननीकी जाको बरछनहीमें करदंडनहिताकोहै। रघुबीर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खंडन त्रिशूलको कुठारीऐसो विरदसदाई ममम्मातुराधि-
का कोहै १ तबतो न कियो कछु कानि अरी बहुभांतिभटू
समुझावन ते। अब बूझिपरी रघुबीरभले जबसौतिन
तावति तावन ते॥ यह मानमेरा सिख गांठ करो अब
आपुहि आवन भावनते। जबलों पद पै न गिरे तबलोंम-
तिमानिनी मानुमनावन ते २ जा दिनते यमुनातट में
सखिजाय अचानकहीं लखिलीन्हो। वादिनते रघुबीरभ-
ले कुलकानिकीबानिनिछावरिदीन्हो॥ केतिक धीरधरो
फिरिकै न धस्यो बरु याब्रजमेंसबचीन्हो। पीरननेकुघटो
घटिको परबावरीबावरोसाँवरोकीन्हो ३ नीकोकछूनलगे
सजनीजबते वहसाँवरी मूरतिटीको। टीकोसबै हियकीब-
तियांगुडियानके खेलिबो त्योंपस्योफीको॥ फीकोपरे क्यों
चवाइन को दिन द्वैक ते गाढ़ परे यह जीको। जीकोकहूँ
रघुबीर किते पिय अंक लगे तो कलंकहु नीको ४ कहु
काते हन्यो रघुबीर निशाचर भोरहि भावत काह हिये।
भुविमें सबते अतिउच्च कोहै मघवा रमणी कह का कहि-
ये॥ हर क्षार कियो क्यहि को रिसकै दशरत्थजू रामको
काह दिये। गृह काते फबै रघुबीर कहै यहि उत्तर मध्य
को मेरे हिये ५॥

रमाकन्त

अखिल अमोघ अघ ओघ ताप नाशहोत सकुच
सरोज सम होत गोत दन्दके। तारन से तामस दुराने
जात दूरहोत भक्तन कुमुद उर अंकुर अनन्द के॥ चा-
हक चकोर चित चौगुना हुलास होत रमाकन्त रहत न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लश छल छन्द के। महिमा महान होत उज्ज्वल प्रमान होत ध्यान होत हृदय सुजान ब्रजचन्द के १ ॥

रामपालसिंह

जानती जो मैं तुम्हें पहलेसे न प्रीति लगावती राम दुहाई। याबेविचार भई मुहिसों सुनो जैसी करी नृप तैसही पाई ॥ का मृगनैनीपै चित्त गयो का मयंकमुखी पैतबीयत आई। कापर मोहि गये तुम यों कहो काके बियोग बिभूति रमाई १ ॥

रामनाथ

प्रश्न कस्यो तिय कंज खिले कब को सब कारक हारक होई। को निशि देखि सदा दुखपात बतावहु जो बरजी सब कोई ॥ कौन कहा जननी बन जावत लक्खन राम सियाहि बिजोई। उत्तर दीन सुजान पिया हँसि प्रातसमय चकई अति रोई १ दीरघ दानन की चहुँ ओरन राम कथा सुनियो सुख सोई। ना रहिहै अब कञ्चन शैल दिवाकर अन्तर कारक जोई ॥ नाशि निशा कछु द्योसन मांझ निरंतरही पति संगम होई। ता प्रभुको हरिधाम सिधारत प्रात समय चकई अतिरोई २॥

ललिते

कूकति कोइलि माती महा हियरे बिरही जनके तपके परे। त्यों ललिते बन बागन ते सुखमान के आनँद से चपके परे ॥ शीतल मन्द सुगंधित पौन ते भूमि प्रसूनभले टपके परे। भारसो भौंरन बौरन को द्रुम अ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

म्बन के झपके लपके परे १ भरे झौंर भारन हजारन सुडारन पै झपाकि लपाकि वर द्रुम द्युति छोरे देत। ललिते लतान के वितान से तने हैं तैसे चहूंओर कोकिला कलित कोर शोरदेत॥ बिकसे चहूंघावर विटप बसन्त बाग निकसे कलीन अति सुखमा हिलोरे देत। बोरेदेत आनँद हियेमो प्रेम घोरेदेत पवन प्रसून भूरि भूमिपै बिथोरे देत २॥

लक्ष्मण

खंजनसी सुठि नैन नचावति भौंह कमानते बान चलावे। बैठी है सौंहें झरोखे अटापर मृदुलता प्रिय गान सुनावे॥ भूषण आदि शृंगार किये वो सुगंध सने सदसेज बिछावे। लक्ष्मण ताहु पै बांह डुलावति का तुमरे लिये डौंड़ी पिटावे १ लखियो जो अशुद्ध कवित्त बतीसी मह शुद्ध करो कबि कोविद राई। क्षमिये अपराध भई गलती अवरु रूठि शब्द जो ग्रंथन पाई॥ महिमे भोजबंश सुवंश सुनों जिनने परमारथ प्रानगँवाई। नर जानहु यासों बखान करे पद आखर आदि जो नाम सुहाई २॥

लाल

रहिगई हौंसिला सदाई मेरे हिय माहँ काहू दिन प्यारी पग मेरो धाम धारितो। करितो निहाल लाल बोलि मुसुक्याइ भले प्रेम की कहानी रससानी परिचारितो॥ छुटिजातो कसक करेज की हमेश कर करि अभिसार पास मेरे अभिसारितो। काढ़िके करद पढ़ि क-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लमा किलोलकर बापुरो बिरहको।जिबह करिडारितो १॥

लालजी

छके सुन्दन चूमे बिमानन को मदसे भरे झूमत त्यों तन है। जकरे पग जोर जँजीरन सों मड़रात मलिन्दन के गन हैं॥ गज व्यंकटरौन महीपति के अति भावत लालजी के मन हैं। गरजे चहुँओरन से घुमड़े उमड़े मनु सावन के घन हैं १ महाराज व्यंकटेश तुरंग तिहारो अति मोदभरे धावत सजीले घन बन में। लाल जी बखानत बिलन्द कौतुकीय बली महिमा महान अभिराम गौनपन में॥ चीते मृग नाहर बराहन पै दावा देत दौरि बृक बाघन कुरंगनके गनमें। टापन टकोरि गिरि शिखर मरोरि मोरि मानो महिफोरि तारिबे को चहे मन में २॥

सम्पति

यामें मंत्र तंत्र पुनि टोटका अनेक विधि यामें विष जंगम अस्थावर विचारहे। यामेंप्रश्नशकुन औ औषधि प्रकार बहु यामें इन्द्रजाल कृषिकर्म को प्रचार है॥ संपति सुभूत टोना डाइन निवारन है यामें काव्यनीति पुनि बाणिज प्रकार हैं। जाको प्राणअर्थ धर्म काम मोक्षसार जग ताको विषोद्धार मंत्र चंद्रिका अधार है १॥

सीताराम

बौरे रसाल पलाश भे लाल सरोज सुताल रहेछवि छाये। कोकिल मोर मलिंद चकोर रहे चहुँ ओर सु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शोर मचाये ॥ मन्द समीर चले अति धीरलगे जनु तीर वियोगिनि काये। आयहु बाम सबै दुखधाम लिये शरकाम बसंत न आये १ अब लीजिये देखि दिखाय सबै ज्यहि को मन साध निहारन को। निशि बासरही हिलियो मिलियो गरसो भरि लागि हजारन को ॥ मन लीजिये देखि बिचारनही निज प्रेमिन के जिय मारन को। धन यौवन रूप अनूप गँवाइबो नाहक काम गँवारन को २ गगन बाण ग्रह चन्द जेष्ठ दशहरा गुरु दिवस। विकस्यो हेतु अमन्द यह अंकुर शृंगार को ३ अंजनी कुमार को अधार बार बार मोहिं पावत ना पार को धरामो जासु बलको। नाथ की सहाय करिबे को गो पतालजाय मार्‍यो महिरावन उबार्‍यो है युगलको॥ लाय पुनि लंकहि लड़ाय दीन्हो रावण सो पीछे फोरि मारि डारी सारी बासु दल को। सीताराम सेवक की बिनती है बार बार कबहुँ न भूलो नाथ मोहिं एक पल को ४ गुण श्रुतिग्रह अरु चंद माधव पूरण इन्दुदिन। नाम प्रताप अमंद प्रगट्यो कलिमल नाशहित ५ ॥

सुजान

शोभित दशन द्युति चंद्रिका समान चारु अमल मयंक मुख सुखमा सुहाय जू। मोतिन की माल त्यों मराल बाल अवलीसी चञ्चल सुजान नैन खंजन लखाय जू ॥ व्रजगोप बालिका सराज मुख मधुप त्यों क्रीड़त निकुंज गुंज बांसुरी बजाय जू। फूले बाल कास मो बिलास बिलसित ऐसो शरद स्वरूप श्याम हूजिये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहाय जू १ भूषण बिराजे तन ताड़िता समान सदा मुकुट मयूर के विकास धरियत हैं। मंद बोल बांसुरी गराज बारि बाहन त्यों हीरन के हार बकपांति परियत हैं॥ कलुष जवासो जन जारत सुजान शाली सुमति हिये मो नेहबुंद भरियत हैं। होन मन काम अभिराम हिय धाम सदा ऐसो घनश्यामको प्रणाम करियत हैं२ क्रूर अक्रूर भये बृजके बृजराज को ले निज साथ सिधारे। तादिन ते कछु सूझिपरे नाहिं छायो चहूँदिशि है अँधियारे॥ वाछिन की कहो काह सुजान चल्यो जबहीं हरिकंस अखारे। लाखन पाखन राखनकी रह्यो नाखन माखन चाखनहारे ३ शरद मो सलीलन छोरेसारिसंगम को करिके तरंग स्वच्छ आनँद सजत है। मुदित मराल संग हंसिनी बिहार करे मधुपमालिंदनी के संग ना तजतहै॥ बासरेश बुद्धिबर विदित सुजान सबैसोऊ सुखपाय राशि युवती भजतहै। खंजन की जोरीखिन होय ना अजोरी अजों कहियो पाथिक कान्ह काहेना लजत है ४ व्योम बाण ग्रह चंदयुत श्रावासासुखद सुखन्म। कृष्णचंद्रके जन्म दिन कृष्णचन्द्रिका जन्म ५॥

सेवक

जागि रहीं सखियां सिगरी कह सेवक झांके किवार उघारी। भोर करेगी सबै उपहास हँसेंगी बजाय बजाय के तारी॥ भाजि न जैहो करो परतीत सबै रखिहों रुचि नाथ तिहारी। कीजे क्षमा घरी द्वैक पिया बजनी घुंघुरू रजनी उजियारी १ श्रौनन को भयो मोहन मंत्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुधारस नैनन आजपियारी। सेवक देखि अनूपमझां कि कसे कटिमें पट केसरियारी। मोहिलियो रचिरास भलो ब्रजराज बजायके बांसुरियारी। नाचत श्यामलखो सजनी बजनी घुंघुरू रजनी उजियारी २॥

श्यामबिहारी

आपहिये लपटातेरहे बतरातेरहे बतिया रससानी। प्रेम प्रमोद बढ़ातेरहे औ सुनातेरहे नित नेह कहानी॥ श्यामबिहारी कहा परीचूक कि जाहिते ऐसो कठोरता ठानी। पांय परो बिनती के अनेकन प्यार न भूलियो प्रीति पुरानी १॥

श्याम

देखुरी देखु अगोटि के नैननि श्याम सरूप अनूप खरे हैं। जागे कहूं निशिपागे हैं रंगमें अंग अनंग तरंग भरे हैं॥ जावक लीक ललाट लगी हिय बीचनखच्छत छाप धरे हैं। वेष अनूठी करे हैं मुरारि सुरारि बढ़ावन आनि अरे हैं १॥

शिव १

आनन चन्द्र लख्यो जबते ब्रजचन्द्र निहारत और न धोखे। तेरेई प्रेमपियूषकी प्यास सुतेरी कथा मनको परिपोखे॥ चैन नहीं दिन रैन हहा रटलाय यही धरि भेष अनोखे। दामिनिसी द्युतिहाय दिखाय गईवाकिते अबझांकिझरोखे १ आजलौं घाटहु बाटनहीं शिवकानहु तानपरी बसुरीको। ताहुपै लोग कुनावधरे अरु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्यंगसुनाय के बेधतहीको ॥ फूंकि के पांयधरों जितनो ब्रजमो उतनाही कलंकको टीको । याते निशंक मिलों अबलालहि अंकलगे तो कलंकहु नीको २ ॥

शिवप्रसाद

जामेंहोत भानुशीत भानुके समान अरु दीपगन अनल अँगेठी लगेथालासे। गीलम गलीचा तूलतलेहू समीरसंग सीरे २ लागत उसीरन के जाला से ॥ कहे शिवकवि त्योंहि कम्बर पटम्बरहू अम्बर सकल उरला-गत है माला से। आला २ सकल मसाला जऊ सेवत हैं तऊ शीतकाला में दुशाला लगे पाला से १ ॥

शिवानन्द

रघुवर जी गुरुद्यालकै दियोनाम उपदेश। शिवानंद सुमिरनकरो मेटो सकल कलेश १ आप भवसागर उ-जागर कहाइबे को कोटिन उपायकरि स्वारथ बढ़ावही। पूजत वैताल भूत प्रेत औ पिशाच सबै छागरदे देवी कहँ नागर मनावही ॥ पावत हैं भोग औ विलास सुख नानाभांति याही रंगराते माते जनम गँवावही । शि-वानन्द बूझो जग काहे में अरूझो शठ एकबार राधे औ गोविन्द क्योंनगावही २ सूरतिसों पहिचानिलियो वह मूरतिनाहिं कछू दरशाही। कोटिन्हरंग रँगे छन में जलको थलको सबरूप दिखाही ॥ तासन नेह करोअ-भिअन्तर काहे को भूलिरहेहो वृथाही। कोटिन्ह और उपायकरो कहे शिवएजीव कृतारथनाही ३ अब्द एक ग्रह वेदवसुमाघबदी सोम्बार। हरितिथि गंगाकेनिकट

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शिवानन्द भवपार॥ भृगुआश्रम के पूर्वदिशि पंचकोश परमान।हरदिग्राम हरिनाम जपि शिवासुकीन्हपयान४॥

हरगोविन्द

रेमनमूढ़ वृथा भटके किन पावत दुःखधराबहुताई। नेकु न ताहि बिचारकरे लपटे यहि मो निजजन्मगँवाई॥ वेदपुरानन की बचमानि भजे किनशङ्कर नाम सुहाई। जोजनको तरु कल्प समान गरीबनकोप्रतिपालकसाई १

हाफिज

नरनीको शीलवान घरनीको धनवान करनीकोयुतदान कहत जहानहै। रूपवान नारि नीको द्वारे चारि गारिनी-को शीतलबयारिनीको तेजवान भानहै॥ बिषबूभे तीर भोड़ो बैद्य बिनतीर भोड़ो ताल बिन नीर और मौनी विद्यावान है। रागी तान बिन भोड़ो तलवार सान बिन हाफिज अधिकभोड़ो मित्रको पयान है १॥

इतिश्रीसुजानकविसंग्रहीतसुजानसरोजग्रंथसमाप्त:॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[कवियों का संक्षिप्तजीवनचरित्र]

अजान सं० १९४१

पण्डित नकछेदी तिवारी डुमराँववासी ये महाशय मनोजमंजरी बीरोल्लास आदि छोटे २ ग्रंथ संग्रह किये हैं रचितग्रंथ कोई नहीं है स्फुट काव्य करते हैं जीविका मालूम नहीं सफ़ा ४ ॥

अम्बादत्त सं० १९१८

इनके नाम से कौन परिचित नहींहोगा भारत रत्न की उपाधि कविसमाज की ओर से मिली पहले वैष्णव पत्रिका सं० १९३९ में निकालेथे अब अपने ग्रामही में † पीयूषप्रवाह नामी पत्रनिकालरहे हैं ग्राम इनका भागलपूर है आजकल मूर्तिपूजापर व्याख्यान अनेकदेशों में देते फिरतेहैं ललितानाटिका समस्यापूर्तिसार तासकौतुक पचासा मूर्तिपूजा ग्रंथ इनके बनाये मेरेपास मौजूद हैं सफ़ा ४ ॥

ईश्वरदत्त सं० १९४८ [मृत्युसम्बत]

परम पूज्य हमारे पिता जू का नाम है पचीस बर्ष तक इन्होंने नौकरीकी तत्पश्चात् मकानपर आय गंगा सेवन करतेरहे मृत्यु इनकी मुनियों की तरहहुई अर्थात् पहले लोगों से कहदिये थे कि हम चैत्रशुक्ल त्रयोदशी

---

† यह पत्र २५ फरवरी सन् १८८५ से निकलने लगा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को मरेंगे वही सो भया स्फुटकाव्य तथा भजन बहुत बनाये हैं किन्तु गूंथ कोई नहीं सफ़ा ५॥

कालिका सं० १९२१ *

श्रीमान् महाराज कुमार बाबू कालिकाप्रसाद सिंह राज्य रियासत हल्दी के हैं कविता अच्छी करतेहैं स्फुट काव्य इन्होंने भी बहुत की है सफ़ा ५॥

कृष्ण

ये महाशय ब्रह्मभट्ट मिश्र असनी ग्राम ज़िले फतेहपूर के हैं और महाराज डुमराँव के यहां कबियों में नौकर हैं महाराज साहिब तथा उनके सुयोग्य दिवानराय जयप्रकाशलाल की बहुत कविता की है गूंथ कोई नहीं देखाहै सफ़ा ६ जन्म इसी शताब्दी का होगा॥

कार्तिक

श्रीयुत बाबू कार्तिकप्रसादजी काशी बासी--कविता अच्छी करते हैं नागरीप्रचारणी सभाके सिक्रेटरी आदि पदों से बिभूषित हैं ऊषामंगल नाटक रूप अच्छे गूंथ रचे हैं सफा ६॥

कान्हसं० १९२४

श्री पण्डित माधवलाल शर्म्माके द्वितीय पुत्र बाबू कान्हूलाल गुरदागया निवासीके हैं गूंथ इन्होंने संगीत मकरन्द श्रावन मयूर सुधातरंगिनी आनन्दलहरी जग

---

* जिसपर यह चिन्ह हो वह जन्म सम्बत् ठीक जानना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाथ माहात्म्य और नखशिख रचेहैं जीविका कलकत्तेमें शायद नौकरी की है सफ़ा ७॥

कमलाकन्त सं० १९००

नाम इनका बाबू रामाकन्त गोरखपूर के वकीलथे वैष्णवी पन्थ रहते थे होलीविहार एकही गून्थ रचकर छोड़दिये स० ७॥

खड्गमल्ल सं० १९१० *

श्रीमान् महाराजा उदयनारायण सिंह राजामझौलीके पुत्र इन महाशयके चरित्रोंसे सब कोई भेदूहै इनके यहां सदासे कवियों का सन्मान होता आया उनसे अधिक ये साहब कदरदान थे हमेशा काव्य कीर्तनही में अपना समय बिताये अपने नामसे † खड्गबिलास प्रेसबाकीपूर में स्थापित किया गूंथ इन्होंने बिशेनबंश वाटिका॥ अपने राज्य के तवारीखरूप अच्छा रचे हैं पर खेद का विषय कि थोड़ेही समयमें ये स्वर्गको सैर करने चले गये इनकी प्रशंसा में हरटिंगटन साहिबने यह लिखी थी Raja Udya Nardyen Mall of MaJhouli and his son Kharg Nall have to day been Zecived by the iVceroy at u Private interview „सफ़ा ८॥

गजेन्द्रशाहि

श्रीमान्हयहो वंशावतंस बाबूगजराजसिंह जी बहादुर हल्दी आपकी जहांतक प्रशंसा कीजाय अत्युक्ति नहीं होगी आपने तुलसीदास की भांति सप्तकाण्ड रा-

† इसी प्रेसके इनके प्रबंध से सन् १८८१ ई० से क्षत्रिय पत्र का निकला॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मायण रचेहैं और रामचन्द्र के अनन्वय भक्त थे इन्हीं के पौत्र रघुबीर कवि जी विद्यमान अधिष्ठाताहैं सफ़ा८

गुलाब

ये महाशय रियासत बून्दी के बाबू हैं रावकरके भूषित हैं वहां के कौंसल के मेम्बर हैं हाथी घोड़ा ग्राम बहुतसाहै आपने छोटी२करीब २५ तक पुस्तक रचीहैं इनका वृत्तांत मुझे बाईचंद्रकला जी से मिला स ९ ॥

गोविन्द

गोपालपूर के महाराज किशुनकिशोरचन्द्र के यहां कवियों में थे उन्हीं के नाम से कोक का ग्रन्थ विलास तरंग रचाहै सुनाजाता है कि सन् १८५७ के बलवे में बागियों के द्वारा मारेगये स० १० ॥

गोपीनाथ

ये महाशय जैपुर राज्य के वकील अर्बुदाचली हैं स्फुट काव्य बहुत करते हैं हमारे समस्यापर इन्हों ने आठ पूर्ति भेजी थी सफ़ा १० ॥

गौरीशंकर

ये महाशय कानपूरके ब्रह्मभट्ट हैं प्यारे प्रतापमिश्र के प्रेमी हैं उन्हीं के नाम प्रताप पुस्तकालय खोला था किन्तु मालूम नहीं कि उसे त्यक्तकर * चरखारीभूषण को सम्पादन करने राज्य चरखारी क्यों चलेगये† भट्ट भास्करके पहिले सम्पादक थे सफ़ा ११ ॥

---

*यहपत्र१जुलाई सन्१८९५से रामगोपाल तिवारीके प्रबन्धसे राज्यचरखारी से निकलताहै।

† यह पत्र कानपूर से १८९३ से निकलने लगा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गोपालानन्द सं० १९०२

पहले ये महाशय सदराला थे किन्तु ऐसी बिराग उठी कि नौकरी से इस्तीफ़ा दे संन्यास धारण करली तत्पश्चात् गोरक्षिणी सभाके सहायक बने वम्हपूराके मेले में इन्होंने कसाइयोंको मार बहुतसे गायें छीनली थीं जिससे डेढ़बर्ष सपरिश्रम कारागार भेजे गये किन्तु छूटनेपर फिरभी अपनी उत्साह नहींछोड़ा सफ़ा ११ ॥

चन्द्रकला

इनके सदृश इस समय में स्त्रियों में कोई काव्य विषयक ज्ञान नहीं रखतीं इन्हों ने महाराज बून्दी के यहां लड़कियों के पढ़ाने में नौकर हैं रामचरित्र सप्त काण्ड अच्छा ग्रन्थ रचो है पदवी प्रकाश महाराज के नाम से बनाई है करुणाशतक भी इनका बनाया देख ने योग्य है सफ़ा ११ ॥

छबीले

आप फतेहपुरके किसीग्रामके निवासी हैं गोस्वामी करके लिखे जाते हैं इन्हों ने स्फुट काब्यकी है किंतुजब से पण्डित कुन्दनलालजी स्वर्गयात्राकी तब से ये महा शय भी न मालूम कहां अन्तरिक्षसे होरहेहैं सफ़ा१२॥

जगतनारायण बनारसी

उक्त पंडितजीको काव्य विषयकतो उतना ज्ञान नहीं किन्तु अपने मतके सच्चे हितैषी हैं इन्होंने ईसाइयों की खंडन की पुस्तक और यमनोंकी दुर्दशा दीनकी अपने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रचित ग्रन्थों से खूब दरशायाहै गोरक्षा की पुस्तक बहुत बनाये हैं कुछ दिनके लिये गोसेवक पत्र भी निकाले थे किन्तु वह बन्द होगया सफ़ा १२ ॥

जगन्नाथ शुक्ल

आप खानजहाचक जिला मुजफ्फरपूर के पण्डित हैं कविता कुछ कुछ करते हैं अंग्रेजी पढ़े हैं देशाटन में अधिक परिश्रम करतेहैं छन्द प्रभाकर हमने इनके यहां भेजा था किन्तु पंडित जी ने लिखा कि हम नहीं पाया पाकट अनरजिस्टर्डथा सफ़ा १२ ॥

तिलकसं०१९३० *

पूरन पुर जिला कानपूर के निवासी शिवराम सिंह के आत्मज हैं सत्रह बर्षकी अवस्था में इन्होंने नागरी में मिडिलोत्तीर्ण हुये तबसे गृहकार्य्य में रह कुछ २ कबिता करते हैं ग्रंथ कोई नहीं रचा है फाल्गुनमें इनका जन्म हुआ सफ़ा १३

दूथनाथसं०१९२०

ये महाशय हरिछपरा के रहने वाले हैं किन्तु भलसण्ड में मुदर्रिसी करते हैं इन्हों ने काव्यविषयक कोई पिंगल आदि नहीं पढ़ी किन्तु जबसे गोरक्षिणी सभा की प्रथा हुई इन्हों ने दो एक ग्रंथ उस बिषय के बनाई यद्यपि कविता काव्य अंगों से हीन होतीथी किन्तु धर्म वाक्य होने से प्रचार बहुत हुई खेद का विषय है कि अब पण्डित जी गोरक्षाते पराङ्मुखसे होरहेहैं बलिया

* यह पत्र सन् १८९३ ई० के जुलाई वो अगस्त से निकला पर जल्दीही बन्द होगया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और दुआबाकी बोली में बहुत कबिता की है सफ़ा १३

धर्मराज

पण्डित जी मिश्र शिवपूर दियर जिले बलिया के बाशिन्दा हैं कबिता कर नाम प्रकाश करने की बहुत चाह रखते हैं किन्तु कबिता नहीं आने के कारण दूसरे की बनाई हुई अपने नामसे छपालेते हैं रसकमोहनी ग्रंथ लक्षम की बनाई आधी तेल आधी पानी कर छपाये हैं बहुत से मार्कंडे की कजलियों में अपना नाम रख दिये हैं सफ़ा १४

नवीन

इनका नाम राय गदाधर प्रसाद ब्रह्मभट्ट है कबिता इनका बहुत समाचार पत्रों में छपा करती है ये बिलग्रामी ब्रह्मभट्टहैं विशेष हाल मुझे मालूम नहींहै सफ़ा १४

प्रतापसं० १९१७

मिश्र प्रताप नारायण कानपूरी के नाम से को बिदितनहीं होंगे मिश्रजी पण्डित संकठा प्रसादजी के पुत्र और मिश्र रामदयाल जी के पौत्र थे ये महाशय अंग्रेजी फारसी बंगला नागरी सब विद्या के पूर्ण ज्ञाता थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के साथियों में थे ब्राह्मण *पत्र सम्पादन करते थे शैवसर्बश्व ज्वारी ख्यारी मनकी लहर प्रेम पुष्पांजलि कलिकौतुक रूपक आदि ग्रंथ बनाये हैं एकबार पण्डित जी ने स्वामी भास्करानन्द जी के साथ

---

* यह पत्र १ मार्च सन् १८८३ ई० को कानपूर से निकला ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कनौज में गोरक्षा पर व्याख्यान दिया था उस में एक लावनी "बांबांकरि तृणदाबि दन्तसे दुखित पुकारत गाई है" गाई थी जिस्में हसनू नामी प्रसिद्ध कसाईने अपना पेशा त्यक्त करदिया खेद है कि पण्डित जी अभी परसालही स्वर्ग बास को चले गये सफ़ा १५

प्यारेसं० १९२८ *

नामतो हिन्दू सा है पर जात मुसलमान है नाम इनका मुहम्मद अब्दुस्सत्तार है काव्य के रसिक हैं इस वक्त मुदर्रिस हैं पिता इनके नामी हकीम हमारे फ़ारसी विद्या के उस्ताद हैं सफ़ा १५

पूरणमल *

झांसी बासी पूरणमल मुदर्रिस भजना नन्दीहैं सफ़ा १६

पन्ना लाल

हमे शुबह है कि यह पन्ना लाल जैन है या घाटम पुरी अग्निहोत्री है इन्हीं दो में कोई होंगे कविता इन की कवि वचित्रकारके प्रति पत्रमें छपीमिली सफ़ा १७

बीरकवि सं० १९१५ *

ये महाशय भारत जीवनपत्र के सम्पादक हैं नाम तो सबपर विदितही है कि राम कृष्ण बर्म्मा हैं सन् १८७५ ई० में इन्होंने अंग्रेज़ी इन्ट्रेंस पासकिया और ७६ में एफ,ए. पासकिया सन् १८८४ में भारतजीवन प्रेस स्थापितकी बाबू हरिश्चन्द्र जी के मित्रों में हैं कवि समाज काशी के मेम्बर हैं महाराज काशीराज श्रीमदी-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्वरी प्रसाद नारायण सिंह G C S I और महाराज प्रभु नारायण सिंह K C I E के दर्बार में सतकारिता प्राप्त हैं पुस्तकें बहुत रचे हैं बलबीर करके भी पदपूर्त्ति करते हैं सफ़ा १६ ॥

बुधनहल्दी बासी सं० १९३१

ये बाबू चौहान बंशी राजपूत हैं नागरी में मिडिलो त्तीर्ण हैं कुछ २ कविता करते हैं हमारी बनाई प्राविट प्रियाको संगृहकर छपाये हैं पिता इनके रामश्याद राव नामी थे सफ़ा १७ ॥

बिंधेश्वरी सं० १९१४

गोरखपुर ज़िले के ग्राम सहगौरा के निवासी तिवारी हैं इस समय डाक के हेडक्लर्क हैं मिथिलेश कुमारी नामी नाटक रचे हैं बहुधा इनकी शब्दार्थ गुटका मदरसों मे जारी है सफ़ा १८ ॥

बामन

गोस्वामी बामनाचार्य्य मिर्जापुरी करके प्रख्यात हैं किन्तु नहीं मालूम किसकन्दरे के बासी हैं कि इनके पास तक पत्र जाना असम्भव होती है हमने इनके जीवन वृत्तांत के लिये दोपत्र लिखा किन्तु वे दोनों अनक्लेम्ड (Unclaimed) करके मेरे पास लौट आई पंचानन पचीसी इनका रचा हरिश्चन्द्रकौमुदी जमोर द्वारा प्राप्त हुआ सफ़ा १८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वचन

इस नाम के दो कवि हैं एक फतेहगढ़ के बचनेश दूसरा कानपूर के बच्चन पर विदित नहीं इन दोनों में कौन हैं कोई हो कवि दोनों अच्छे हैं सफ़ा १९ ॥

भानु सं० १९१६

इनका नाम जगन्नाथ प्रसाद है एसिस्टन्ट सेटिल-म्यन्ट आफिसर वैतूलके हैं जन्म इनका श्रावण शुक्ल १० को नागपूर में हुआ मुख्यस्थान बिलासपुरहै अंग्रे-जी उर्दू उड़ियाके ज्ञाता हैं पिता इनके श्री बख़्शीराम जी हनुनाटक बनाये हैं ये महाशय केवल छन्दप्रभाकर नामी पिंगल एकही रचे हैं धर्म ब्रह्मोसमाजी हैं जात बताने में आपने यह चौपाई लिखी "जातपांति पूंछे नहिं कोई। हरिके भजे सो हरिके होई॥ सफ़ा १९ ॥

मार्कण्डे

ये कवि कोपागंज निवासी हैं सूर्य्यपूरा के दिवान साहब तथा उनके पुत्र राजेश्वरीप्रसाद जी के आज्ञा-नुसार श्रावणश्रृंगार नामकग्रन्थ बनाये हैं और शरद ऋतु इत्यादि पर षटऋतु काव्य बहुत किये हैं जन्म सम्बत् विदित नहीं है सफा १९ ॥

मनराजसं० १९०९

श्रीमान् बाबू कुंवरासिंह बहादुर जगदीश पुरीके यहां मुसाहेब में नौकर थे सन् १८५७ ई० के बलवे में जब बाबू साहब अंगेजों से बिरुद्ध खड़े होगये उन्हींके साथ२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ये भी लड़ते फिरे बल्कि उनके घोड़े के तारीफ़ में एक कबित्त यह कहा था "समुद सुरंग लीला मकसी कुरंग ऐसो कुल्ला औ कुमैत मनिजोति लरकतहै। अबलख टोपरा लखाउरी सबुजगरी कक्षी के तमासे देखि पक्षी सरकत हैं॥ कहे मनराज बाजी कुवँर बहादुर के बढ़त कतार भानुरथ हरकत हैं। बदले कनोटी करे नेकऊन खोटी देखो चोटी के छुयेते बोटी २ फरकत है १॥

रघुबीर सं० १९१९ *

स्वस्तिश्री मान् महाराज कुमार बाबू रघुनन्दन प्रसाद सिंहजी हल्दीवाले इनकी विज्ञता विद्वानता विभव और व्यवसाय सराहनीय है आप काव्यके पूर्ण रसिक हैं सैकड़ों पुस्तक काव्य की इकट्ठी की हैं सभातरंग इनकी बनाई ग्रन्थ देखने योग्यहै इनके पिता श्रीरामनारायण सिंह जू अच्छे विद्यावान थे सफ़ा १९॥

रमाकन्त सं० १९२० *

बलिया अन्तर्गत पण्डित पुरा ग्राम निवासी उक्त पण्डित जी कवियोंमें महान माननीयहैं कविताही नहीं बरन ज्योतिष शास्त्रके भी ऐसे भेदू हैं कि जिसे अनेक राजाओं के यहां सत्कारिता प्राप्तकी है किसी नागरी के मिडिल वाले लड़के ने कहा कि मिडिल का कोर्स बड़ा कड़ा है इन्हों ने कहा ज्योतिष शास्त्र बड़ा कठोर है मिडिल तो हम दो सप्ताहमें पढ़ इम्तहान दे पास होसक्ते हैं विद्यार्थी के बादाबिबाद करने से इन्होंने ऐसाही कर दिखाया सफ़ा २०॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रामपाल सिंह

श्रीमान् राजा कालाकांकर ये महाशय से कौन अ-परिचित हैं आप भारत के भलाई के लिये भरपूर उ-द्योगी हैं वरन आपने पत्र हिन्दोस्थान * इसी आकांक्षा पर निकाला जिसका टेकू अभीतक निबाहा जाता है पहले अंग्रेज़ी में पत्र हिन्दोस्थान इंगलैण्डमें जारी किये थे तत्पश्चात् अपने राजधानी में हिन्दी और इंगिलिश। दोनों भाषा में दो पत्र निकाल रहेहैं सफ़ा २१

राव रामनाथ बुन्दीवाले

इनकी संक्षिप्त वृत्तान्त चन्द्कलाबाई जी से प्राप्त भयो ये महाशय अच्छे कविता हैं बरन इस बिषय पर समाजों से अनेक प्रशंसा पत्र तथा मिडिल पास की है इनके बनाये ये ग्रंथ हैं परमेश्वराष्टक सती चरित्र स-मस्या सार रामनीति नीतिसार सफा २१ ॥

ललित

मल्लावां भगवन्तनगर के त्रिबेदी ललिता प्रसाद जी अच्छे कवि हैं इनकी काव्य सराहनीय होती है इन के भांजे पण्डित कामता प्रसाद जी भी अच्छे कवि हैं काव्य स्फुट करते हैं सफ़ा २१ ॥

लक्ष्मण १९२१

तिवारी लक्ष्मण जी भलसंडके रहनेवाले हैं जीवि-का इनकी नौकरी मुदर्रिसी है आप काव्यके ऐसे उत्सा

---

* यह पत्र अगस्त मास सन् १८८३से १८८५ के जुलाईतक इंगलैंड में प्रकाशितहोतारहा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ही पुरुषहैं कि अंट संट भी बनागूंथ छपादेते हैं आप की प्रथम काव्यकी पुस्तिका कवित्त बत्तीसी ४ पन्ने की है जिसका नमूना यह है सवैया " सरल सुभाव अंग लखानि तिवाणी बोलेबर प्रीति की सानी। चाल चले सुमराल इवविधि बुद्धि विवेक में इन्द्र समानी॥ दान करे हरिश्चन्द इमिसनमान करै उनके अनुमानी। सर राधा प्रसाद जू में कहे लक्ष्मण रूप मिलिये निशानी॥ "दूसरी पुस्तिकारसिकमोहनी भी विलोकनीयहैसफ़ा२२

लाल हल्दीवासीसं०१९३४

श्री महाराजे ठाकुरप्रसाद देवजी के प्रथम पुत्र श्री राजेन्द्र प्रतापनारायण जी पावस प्रलाप नामी गूंथ बनवाये हैं सफ़ा २२॥

लालजी

फतेहपुरान्तर्गत असनी ग्राम बासी ब्रह्मभट्ट हैं इन लोगों की तो काव्य जीविकाही है फिर कबि क्योंन होवें ये कबि महाराज श्रीव्यंकटेश्वर प्रसाद महाराज रीवाँ के यहां कबियों में नौकर हैं सफ़ा २३॥

सम्पतिसं०१९२९

मुजफ्फर पुरमें जज्जीके किसी क्लर्क के मुहर्रिरहैं नीति भूषण नामी गूंथ काव्यका और मन्त्रबिषोद्धारचन्द्रिका बिषनिवारण का इनका बनाया हमने देखा है सफ़ा २३॥

सीतारामसं०१९२४ *

ये महाशय पिलकिछा ग्राम निवासी भारद्वाजी उ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाध्याय हैं जीविका इनका काश्तकारी और ब्योहार का है काव्य के अत्यन्त चातुर हैं अनेक समाचार पत्रों ने इनकी प्रशंसाकी है चैतन्यचन्द्रोदय बामामनरंजन नाम प्रताप शृंगारांकुर काव्यकलामिनी और मण्डली मण्डन इन्होंने ग्रंथ रचा है इनके पिता उपाध्याय शिव जगत जी भी अच्छे थे सफ़ा २३

सुजानसं०१९३० [संग्रहकर्ता]

आप सब शायद सुजान नाम देख मुझे चतुर का अर्थ लगाते होंगे सो मत समझियेगा मैं एकतुच्छव्यक्ति हूँ नाम मेरा पण्डित बख़्शराम पांड़े है ग्राम हल्दी जानतेहीहैं मैं नागरी फ़ारसी अंग्रेज़ी और बंगला कुछ २ सबका बोध रखताहूं और आप सरीखे कवियों के सत्संगही से काव्य की गम्य हुई है संगीतशिखा बिरह बिहार शिवारामसरोज चुनाचमन और गंगेतरंगावली संगृह पुस्तक हैं औ श्रीकृष्णचन्द्रचन्द्रिका समस्या पूर्तिसार और प्राविटप्रिया रचित ग्रंथ हैं यद्यपि गृह के झंझट से समय अवकाश की नहीं मिलती तो भी किसी न किसी भाँति अपनी प्यारी भाषा से मिलही लेताहूँ सफ़ा २४

सेवक

इनका नाम मुन्शी कालीचरणजी है कानपूरके प्रसिद्ध वकील मुन्शी गुरुसहाय साहब के मुहर्रिर हैं आप भाषाके पूर्णप्रेमी हैंरसिकबाटिका में इन्होंने एकलम्बा चौड़ा भाषा के उन्नतिपर ब्याख्यान दिये हैं सफ़ा २५॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्यामबिहारी॥

गाज़ीपूरके निवासी उक्तमिश्रजी पं० प्रतापनारायण के पूर्णप्रेमी हैं उनके स्वर्गयात्रा का नाम सुनये महाशय बहुत विह्वलहुये थे "प्यारे न भूलियो प्रीतिपुरानी,, उसी शोकावस्था में बनाये थे इन्होंने भी कवियों की नामावलीएकत्र करने के लिये इश्तहार दीथी और बहुत से एकत्रकिये भी हैं सफ़ा २६ ॥

श्यामोपनामरणजीतमल्लसं०१८३३*

महाराज मझौली उदय नारायणसिंहके भातृथे तेरह बर्ष की अवस्था में काव्य इन्हों ने अच्छीतरहकरते थे इसी अवस्थामें स्वर्गलोक भी इनका होगया सफ़ा२६ ॥

शिव

पटनाजजीके हेडकिरानी शिवनन्दनसहायजी-इनका ग्राम इसी अन्तके बखतियारपुरमेंहै अक्सरसमस्याओं की पूर्ति करतेहैं ग्रंथकोई नहींरचा एकबारआपने हमारे समस्या छपीहुई की पूर्तिकरभेजा तबसेमेरे भेजनेपरभी अपना जीवन वृत्तान्त कुछनहींलिखा सफ़ा २६ ॥

शिवप्रसाद

ये महाशय दरभंगा के पण्डित हैं कविता अच्छी करते हैं बरन इसी समस्या अर्थात् "भाल लिखीलिपि को सक टार,,परपं०कुन्दनलालजी घड़ी उपहारमें देना कहा था सफ़ा २७॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शिवानन्द

कवि के अतिरिक्त ये महाशय महात्मा भी थे हल्दी ग्राम बासी ब्राह्मण थे एक मर्तबा मालगुज़ारी में जमींदार ने इनका नाजका गल्ला ज़ब्त कररक्खा था इन्हों ने ऐसी प्रयोगकी कि सैकड़ों मनुष्यकी मृत खोपड़ी अपने छिद्रमें नाज भर २ इनके घर पहुंचागईं शिवाराम सरोज इनका बनाया शान्तरस का ग्रंथ देखने योग्यहै सफ़ा २७॥

हरगोविन्द सं० १९३१

ग्राम इनका भरसौंता है बरहिया राजपूत बोधीराय के लड़के हैं काव्य का शौक रखते हैं कभी२ एक आध कवित्त उगिल भी देते हैं पिता इनके "जयनारसिंह" के ओझा हैं सफ़ा २८॥

हाफ़िज सं० १९१३ *

हरदोई अन्तर्गत बन्नापूरके मुदर्रिस हैं ग्रामसांडी मुहल्ला ऊंचा टीला है मुसलमान होने पर भी गजल सैर से मुखमोड़ विशेष कर भाषा काव्यको आदर करने वाले हैं ग्रंथ इन्होंने नवीनसंग्रह हजारा मनमोहनी प्रेमतरंगिणी रसिकजीवनी संग्रहकी हैं किन्तु इतने पुस्तकों में एकही आध निज रचित कविता है सफ़ा २८

समाप्त

इतिश्री सुजानकविसंग्रहीतसुजानसरोजग्रन्थ कवियों कीसंक्षेपजीवनचरित्र समाप्तः॥

इति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[कविसंख्या उन्नीसवींशताब्दी]

निम्नलिखित कवियों से विनय है कि आप सबके हालातों से भेदू नहीं थे अतः केवल नाममात्र लिखदेते हैं यदि आप सब अपना पूरा वृत्तान्त भेजेंगे तो दूसरे खण्ड में प्रकाशित करदीजायगी जो अति शीघ्रतय्यार होनेवाली है विशेष क्षमा करना ॥

---

१ रसीले = कासीबासी
२ लछिराम = अयोध्या
३ रतनेश = काल्पी
४ वंशी = कानपूर
५ रत्नाकर = काशी
६ पं०शीतलाप्रसाद=काशी
७ प्रयाग = निवन्ना उन्नाव
८ गंगाप्रसाद = जगतपूर
९ रामगोपाल = पिलकिछा
१० सूर्य्यलाल = मथुरा
११ बल्लभजी = डुमराँव
१२ मुरली = भरतपूर
१३ गंगाराम = फुलपूर
१४श्यामलाल=दाऊदनगर
१५ मिश्रसेवक = रीवाँ
१६ युगलदास = रीवाँ
१७ सुखराम = पटयाला
१८ छठीलाल = भागलपूर
१९ कान्तजी = जौनपूर
२० बिश्वनाथ = दरभंगा
२१ बिक्रमसिंह = बनकोटा
२२ महेन्द्र = उदयपूर
२३ मुकुन्दजी = हाथरस
२४ महाबीर = झांसी
२५ गंगासिंह = मैनपूर
२६शेषकरीम=हल्दीबालिया
२७ द्वारका = बिलग्राम
२८ श्यामसुन्दर = काशी
२९ बिश्वनाथ=कालाकाँकर
३० रामलाल = काशी
३१ अशरफी = रामनगर
३२ अक्षयवट = डुमराँव
३३ रामचरित्र=आजमगढ़
३४ परमानन्द = रायपूर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

३५ हरिऔध=निजामाबाद	३८ गोविन्द = सिहोरभाव [नगर
३६ रामकिशोर = डुमराँव	
३७ बलदेव = रामनगर	

पं० सुजानकविहल्दी
बलिया

इति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor